कथा सरिता

विज्ञान और ईश्वर

एक बार एक ट्रेन जो दिल्ली से कानपुर जा रही थी। उस ट्रेन के फर्स्ट ए.सी. में दो लोग, एक नवयुवक और एक बुज़ुर्ग यात्रा कर रहे थे। नवयुवक की नज़र बहुत देर से सामने बैठे बुर्ज़ुग पर थी जो लगातार गीता पढ़ रहे थे और मंद मंद मुस्करा रहे थे। अचानक नवयुवक ने उनको चुनौती दी कि भगवान तो होते ही नहीं हैं तो फिर आप ये सब झूठ कब तक मानते रहेंगे, जो है वो सब विज्ञान है। वो बुज़ुर्ग बहुत देर तक उस नवयुवक के भगवान के अस्तित्व और विज्ञान के चमत्कारों के सभी तर्कों को ध्यान से सुनते रहे। उस नवयुवक ने उनको बताया कि वो एक खगोल वैज्ञानिक है और वो सारे ग्रह के बारे में जानता है, कोई सूर्य चन्द्र भगवान नहीं है। और उसके इसी प्रयोगों से प्रभावित होकर सरकार उसको एक पुरस्कार भी दे रही है। फिर करीब दो घंटे बाद जब उस नवयुवक को लगा कि वो बुज़ुर्ग उसकी बातों से प्रभावित नहीं हो रहे हैं तो उसने ये कह के बात ख़त्म की कि जब बीमार होंगे तो विज्ञान ही काम आयेगा भगवान नहीं। और इतना कह कर वो सो गया और बुज़ुर्ग वापस गीता पढ़ने में मग्न हो गए। सुबह बुज़ुर्ग ने उस नवयुवक को जगाया और बताया कि आपको लेने के लिए लोग आये हैं कृपया तैयार हो जायें, वे बाहर इंतज़ार कर रहे हैं, और इतना कह कर उन्होंने मुस्करा के विदा ली। आई.आई.टी. कानपुर में जब पुरस्कार वितरण कार्यक्रम शुरु हुआ तो उस नवयुवक वैज्ञानिक की खूब तारीफ हुई और उसको पुरस्कृत करने के लिए देश से सबसे वरिष्ठ वैज्ञानिक को मंच पर बुलाया गया। जब वो वरिष्ठ वैज्ञानिक मंच पर आये तो उस नवयुवक की आंखें फटी की फटी रह गयीं। अरे ये तो वही बुज़ुर्ग हैं जो कल उसके साथ यात्रा कर आ रहे थे। और वो गीता की तारीफ कर रहे थे। वो नवयुवक तुरंत उनके पैरों में गिर पड़ा और अपने लिए माफी मांगने लगा, और पूछा कि सर अब आप बताइए कि आपने कल मेरा विरोध क्यों नहीं किया ?

बुज़ुर्ग ने कहा, बेटा मैं भी ठीक ऐसा ही था, पर धीरे धीरे प्रयोग करते करते मुझे अहसास हुआ कि ऐसे कुछ प्रश्न हैं जिनका उत्तर कभी विज्ञान नहीं खोज सकता और वो एक अदृश्य शक्ति द्वारा संचालित है। तभी से मुझे समझ में आया कि जहाँ सारा विज्ञान ख़त्म होता है वहा ईश्वर शुरु होता है।

अच्छा आदमी, बुरा आदमी

पाण्डवों और कौरवों को शस्त्र शिक्षा देते हुए आचार्य द्रोण के मन में उनकी परीक्षा लेने की बात उभर आई। परीक्षा कैसे और किन विषयों में ली जाये। इस पर विचार करते उन्हें एक बात सूझी कि क्यों न इनकी वैचारिक प्रगति और व्यावहारिकता की परीक्षा ली जाये।

दूसरे दिन प्रातः आचार्य ने राजकुमार दुर्योधन को अपने पास बुलाया और कहा - `वत्स, तुम समाज में से एक अच्छे आदमी की परख करके उसे मेरे सामने उपस्थित करो।' दुर्योधन ने कहा - `जैसी आपकी इच्छा।' और वह अच्छे आदमी की खोज में निकल पड़ा। कुछ दिनों बाद दुर्योधन वापस आचार्य के पास आया और कहने लगा- `मैंने कई नगरों, गाँवों का भ्रमण किया परन्तु कहीं कोई अच्छा आदमी नहीं मिला। इस कारण मैं किसी अच्छे आदमी को आपके पास न ला सका।'

अबकी बार उन्होंने राजकुमार युधिष्ठिर को अपने पास बुलाया और कहा - `बेटा! इस पृथ्वी पर से कोई बुरा आदमी ढूंढ़ कर ला दो। युधिष्ठिर ने कहा -`ठीक है महाराज, मैं कोशिश करता हूँ।' इतना कहने के बाद वे बुरे आदमी की खोज में चल दिये।

काफी दिनों के बाद युधिष्ठिर आचार्य के पास आये। आचार्य ने पूछा - `क्यों ? किसी बुरे आदमी को साथ लाये ?' युधिष्ठिर ने कहा - `महाराज, मैंने सर्वत्र बुरे आदमी की खोज की, परंतु मुझे कोई बुरा आदमी मिला ही नहीं। इस कारण मैं खाली हाथ लौट आया हूँ।'

सभी शिष्यों ने आचार्य से पूछा- `गुरुवर, ऐसा क्यों हुआ कि दुर्योधन को कोई अच्छा आदमी नहीं मिला और युधिष्ठिर को कोई बुरा आदमी नहीं।'

आचार्य बोले- `बेटा! जो व्यक्ति जैसा होता है उसे सारे लोग अपने जैसे दिखाई पड़ते हैं। इसलिए दुर्योधन को कोई अच्छा व्यक्ति नहीं मिला और युधिष्ठिर को कोई बुरा आदमी न मिल सका।'

बिल्ली और बंदर

एक गाँव में दो बिल्लियाँ रहती थीं। वह आपस में बहुत प्यार से रहती थीं। उन्हें जो कुछ मिलता था उसे आपस में बाँटकर खाया करती थीं। एक दिन उन्हें एक रोटी मिली। उसे बराबर-बराबर बाँटते समय उनमें झगड़ा हो गया। एक बिल्ली को अपनी रोटी का टुकड़ा दूसरी बिल्ली के रोटी के टुकड़े से छोटा लगा। परंतु दूसरी बिल्ली को अपनी रोटी का टुकड़ा बड़ा नहीं लगा।

जब दोनों बिल्लियाँ किसी समझौते पर नहीं पहुँच पाईं तो दोनों बिल्लियाँ एक बंदर के पास गईं। उन्होंने बंदर को सारी बात बताई और उससे न्याय करने के लिए कहा। सारी बात सुनकर बंदर एक तराज़ु लेकर आया और दोनों टुकड़े एक-एक पलड़े में रख दिये। तोलते समय जो पलड़ा भारी हुआ, उस वाली तरफ से उसने थोड़ी सी रोटी तोड़कर अपने मुँह में डाल ली। अब दूसरी तरफ का पलड़ा भारी हो गया, तो बंदर ने उस तरफ से रोटी तोड़कर अपने मुँह में डाल ली। इस तरह बंदर कभी इस तरफ से तो कभी उस तरफ से रोटी ज़्यादा होने का कहकर रोटी तोड़कर अपने मुँह में डाल लेता।

दोनों बिल्लियाँ चुपचाप बंदर के फैसले का इंतज़ार करती रहीं। परंतु जब बिल्लियों ने देखा कि रोटी के दोनों टुकड़े बहुत छोटे-छोटे रह गये तो वह बंदर से बोली कि - `आप चिंता ना करें, हम अपने आप बँटवारा कर लेंगी।'

इस पर बंदर बोला - `जैसा आप ठीक समझो, परंतु मुझे भी अपनी मेहनत की मज़दूरी मिलनी चाहिए।' इतना कहकर बंदर ने बाकी बचे हुए रोटी के दोनों टुकड़े अपने मुँह में भर लिए और बिल्लियों को वहाँ से भगा दिया।

दोनों बिल्लियों को अपनी गलती का बहुत दुःख हुआ और उन्हें समझ आ गया कि `आपस की फूट बहुत बुरी होती है और दूसरे इसका फायदा उठा सकते हैं।'

कूचबेहर-प.बंगाल। केन्द्रीय गृहमंत्री माननीय किरण रिजीजू एवं प.बंगाल के भाजपा अध्यक्ष दिलीप घोष को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. सम्पा।

भीनमाल-राज.। विश्व पर्यावरण दिवस के कार्यक्रम में पौधारोपण करते हुए सवलाराम देवासी,चेयरमैन, जैरूपरम माली,वाइस चेयरमैन, सरदार सिंह ओपावत,प्रेसीडेंट,क्षेमकारी माता ट्रस्ट, किशोरजी वनीगोटा,प्रेसीडेंट,गजानंद साईधाम, ओमप्रकाश खेतावत,प्रेसीडेंट,भारत विकास परिषद व ब्र.कु. गीता।

झालावाड़-राज.। विश्व पर्यावरण दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सी.ई.ओ. जिला परिषद अधिकारी रामपाल शर्मा, सी.एम.एच.ओ. जिला स्वास्थ्य एवं चिकित्सा साजिद खान, सामाजिक एवं न्याय अधिकारिता निर्देशक अजीत शर्मा, ब्र.कु. मीना व ब्र.कु. नेहा।

जिन्द-हरियाणा। विश्व पर्यावरण दिवस पर विशिष्ट अतिथियों के साथ पौधारोपण करते हुए ब्र.कु. बहनें।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर को होण्डा मोटर्स द्वारा सी.एस.आर. के तहत एक ए.सी.एल.एस. एम्बुलेंस भेंट किये जाने पर उसका उद्घाटन करते हुए पटौदी उपमंडल के एस.डी.एम.रवीन्द्र यादव, होण्डा मोटर्स के जी.एम. हरभजन सिंह, सरपंच यजुवेन्द्र शर्मा, ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा, उद्योगपति बी.के. ग्रोवर व अन्य।

दिल्ली-शक्तिनगर। समर कैम्प का शुभारंभ करने के पश्चात् समूह चित्र में बच्चों के साथ डॉ. एम.एम. गुप्ता,चाइल्ड स्पेशियलिस्ट, ब्र.कु. चक्रधारी, ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. प्रभजोत,समर कैम्प संयोजक, मधु गुप्ता,बी.जे.पी. पार्टी मेम्बर व अन्य।